
ShrI Annapurnastotram

श्रीअन्नपूर्णास्तोत्रम् अपरनाम अन्नपूर्णाष्टकम्

Document Information

Text title : annapurnaastotram 1

File name : annapurna.itx

Category : devii, pArvatI, stotra, shankarAchArya, annapUrNA, devI, aShTaka

Location : doc_devii

Author : Shankaracharya

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Description-comments : Last three verses are from Annada Kalpa Tantra paTala 16

Source : Complete Works of Shankaracharya

Latest update : August 9, 2000, December 11, 2015

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

ShrI Annapurnastotram

श्रीअन्नपूर्णास्तोत्रम् अपरनाम अन्नपूर्णाष्टकम्



नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताभिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाछेश्वरी । var घोरपापनिकरी
प्रावेयायलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषाकाकरी उमाभराऽम्बरी
मुक्ताडारविलम्बमान विलसत् वक्षोजकुम्भान्तरी ।
काश्मीरागरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
यन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वेश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ३ ॥

डैलासायलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी ।
भोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

दृश्यादृश्य विभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्करी ।
श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ५ ॥

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वानन्दकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काशमीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलङ्करी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दक्षायणी सुन्दरी
वामे स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्य मालेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ८ ॥

यन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा यन्द्रांशुभिम्बाधरी
यन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी यन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ९ ॥

क्षत्रत्राणकरी मण्डलभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्भोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।
दक्षाकन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १० ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि य पार्वति ॥ ११ ॥

माता मे पार्वती देवी पिता देवो मलेश्वरः ।
आन्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीशङ्करभगवतः कृतौ अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

There are multiple variations of this popular stotra .

The more common version is given above. Following three verses
are inserted after verse number 10 in some printed editions.

These are taken from annadA kalpa tantra ShoDasha paTalam

भगवति भवरोगात्पीडितं दुष्कृतोत्वात्
सुतदुडितृकलत्रोपद्रवेणानुयातम् ।
विलसदमृतदृष्ट्या वीक्ष्य विभ्रान्तचित्तं

सकलभुवनमातस्त्राखि मामो नमस्ते ॥ ११ ॥

मालेश्वरीमाश्रितकल्पवल्लीमलम्भवोरखेदकरी भवानीम् ।


क्षुधार्तजायातनयाद्युपेतस्त्वामन्नपूर्णे शरणां प्रपद्ये ॥ १२ ॥

दारिद्र्यदावानलदण्ड्यमानं पाण्ड्यन्नपूर्णे गिरिराजकन्ये ।


दृषाम्भुधौ मज्जय मां त्वदीये त्वत्पादपद्मार्पितचित्तवृत्तिम् ॥ १३ ॥

Encoded by Kapila Shankaran

and Sunder Hattangadi

——
ShrI Annapurnastotram

pdf was typeset on February 2, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

